17 दिसम्बर 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर
दोपहर 3 से 4 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 43, अंक : 18
दिसम्बर (द्वितीय), 2020 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

शिखर महोत्सव सम्पन्न

अष्टान्हिका महोत्सव के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई और श्री कुन्दकन्द कहान सर्वोदय ट्रस्ट दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में शाश्वत तीर्थक्षेत्र सम्मेदशिखरजी की तलहटी में स्थापित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर के जिनमंदिर का आठवाँ वार्षिकोत्सव और 43वाँ आध्यात्मिक ऑनलाइन शिक्षण शिविर दिनांक 22 से 29 नवम्बर तक शिखर महोत्सव के रूप में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर शिखरजी स्थित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर द्वारा रचित श्री प्रवनचसार मण्डल विधान का आयोजन पण्डित संजय शास्त्री जेवर और पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन के विधानाचार्यत्व में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री नेमिषभाई शाह मुम्बई, ध्वजोहरण श्री सुनीलजी सर्राफ सागर एवं चित्रों के अनावरण विधि श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, श्री राजेशभाई जवेरी अहमदाबाद और श्री विपुल भाई मोटाणी मुम्बई द्वारा हुई। श्रीमती निकिता ज्ञाता झांझरी सूरत के मंगलाचरण से प्रारंभ हुई इस सभा में श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री पवनजी जैन मंगलायतन, श्री अशोकजी बड़जात्या इंदौर, श्री अजितभाई जैन बड़ौदरा और श्री अशोकजी बजाज परिवार सहित उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन श्री वीनूभाई शाह मुम्बई ने किया।

इस प्रसंग पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर का मांगलिक व्याख्यान संपन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम प्रवचनसार ग्रन्थ के स्वाध्याय की मुख्यता से तैयार किया गया था; अत: प्रात:कालीन विधान से लेकर समस्त प्रवचन और गोष्ठियाँ प्रवचनसार ग्रन्थ के विषयों और उपविषयों पर आधारित थीं। कार्यक्रम में गुरूदेवश्री के प्रवचनसार ग्रन्थ पर सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ़, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शांतिकुमारजी पाटिल जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित चेतनभाई मेहता राजकोट, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित प्रकाशभाई

(शेष पृष्ठ 5 पर...)

23वाँ आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित 23वाँ आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर रविवार, दिनांक 1 नवम्बर से रविवार, दिनांक 8 नवम्बर, 2020 तक सानन्द संपन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन – दिनांक 1 नवम्बर को आयोजित उद्घाटन समारोह में ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर ने एवं शिविर उद्घाटन श्री अशोककुमार चक्रेशकुमार सुशीलकुमार (मुन्नाभैया) बजाज परिवार कोलकाता ने किया। तत्पश्चात् श्री साकेतजी जैन सिंगापुर द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द, श्रीमती सुनीता ध.प. प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय ध्याता बजाज परिवार कोटा द्वारा आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी एवं श्री भबूतमलजी चम्पालालजी रमेशजी भण्डारी परिवार बैंगलोर द्वारा गुरुदेवश्री के चित्र का अनावरण किया गया।

सभा की अध्यक्षता श्री सुशीलजी गोदिका ने की। शिविर का परिचय व सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, संस्था का परिचय पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं मंगलाचरण विदुषी परिणति जैन विदिशा ने किया।

शिविर के सारथी – इसका सौभाग्य श्री अनन्तराय अमूलखचन्द शेठ परिवार मुम्बई, श्रीमती सुनीता ध.प. प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय ध्याता बजाज परिवार कोटा, श्री अजितप्रसादजी जैन वैभव जैन परिवार दिल्ली, श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार सिंगापुर/कोलकाता, श्री विद्याप्रकाशजी संजय अजय दीवान परिवार सूरत/सीकर, श्री महेन्द्रकुमारजी राहुल-विनीत गंगवाल परिवार जयपुर, श्रीमती कुसुम ध.प. प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता को प्राप्त हुआ।

समारोह में श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री पवनजी स्वप्निलजी जैन मंगलायतन, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, श्री अनिलजी सेठी बैंगलोर, श्री गजेन्द्रजी पाटनी (पी.सी.एस.) मुम्बई, श्री विपुलभाई मोटानी मुम्बई, श्री अशोकजी अरिहंत कैपिटल इन्दौर, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री नितिनभाई सी. शाह मुम्बई आदि अनेक श्रेष्ठीगण उपस्थित थे।

विशिष्ट विद्वत्समागम – शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रात: समयसार तथा सायंकाल दोहाशतक (देव-शास्त्र-गुरु के स्वरूप पर नवीनतम कृति) पर मार्मिक व्याख्यानों के

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

⑨ सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

द्वितीय अध्याय का सार (संसार अवस्था का स्वरूप)

(गतांक से आगे...)

जीव और कर्मों की भिन्नता को पण्डितजी ने सोने और चांदी का उदाहरण देकर स्पष्ट किया है। जैसे सोना और चांदी सैंकड़ों वर्षों से आपस में मिले हुए हों तो भी चांदी का कोई परमाणु सोने रूप नहीं होता और सोने का कोई परमाणु चांदी रूप नहीं होता, ये वस्तु का स्वरूप है, कभी नहीं बदलने वाला स्वभाव है।

अमूर्तिक आत्मा का मूर्तिक कर्मों से बंधान –

यहाँ पण्डितजी ने प्रश्न उठाया कि आत्मा तो अमूर्तिक है और कर्म मूर्तिक हैं, उनका आपस में बंधन कैसे हो सकता है? इसका जवाब देते हुए कहा कि जिसप्रकार सूक्ष्म-अव्यक्त इन्द्रियगम्य तथा स्थूल व्यक्त जो इन्द्रियगम्य नहीं हैं – ऐसे पुद्गलों का परस्पर में बंधान हो जाता है, उसीप्रकार अमूर्तिक आत्मा और मूर्तिक पुद्गल कर्म का भी परस्पर बंध हो जाता है। इसे हम विज्ञान की दृष्टि से पानी बनने की प्रक्रिया के रूप में भी देख सकते हैं। जैसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन गैस दिखायी नहीं देती, किन्तु मिलने के बाद **(H_2O)** पानी दिखायी देने लगता है।

आत्मा और कर्मों के परस्पर बंधान के संबंध में पण्डितजी एक विशेष बात लिखते हैं – **'इस बंधन में कोई किसी को करता नहीं है।'** अर्थात् आज तक आत्मा ने कर्म में कुछ नहीं किया और कर्म ने आत्मा में कुछ नहीं किया, ये बात विशेष ध्यान देने योग्य है।

पण्डित टोडरमलजी ने अभी तक यह सिद्ध किया कि इस जीव के अनादि से कर्मबंधन का रोग है, अब यह कहते हैं कि इस रोग से क्या-क्या अवस्थाएं होती हैं। जिसप्रकार वैद्यजी द्वारा शरीर की अवस्थाएं बताने पर उनका निश्चय करके अपने रोग का भरोसा होता है, उसीप्रकार पण्डितजी कह रहे हैं कि कर्म के निमित्त से आत्मा की ऐसी अवस्थाएं होती हैं। कर्म निमित्त से हो रही इन अवस्थाओं का निश्चयकर इस जीव को अपने संसार रोग पर भरोसा होता है।

यहाँ घातिया और अघातिया कर्मों के उदयजन्य अवस्था को बताते हैं। उनमें से प्रथम घातिया कर्म के उदय में ज्ञान, दर्शन और वीर्य का घात होता है और मोहनीय कर्म के उदय से इस जीव की विपरीतता देखी जाती है। ये दो कार्य इस घातिया कर्म के उदय से इस जीव के होते हुए देखे जाते हैं।

यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि घातिया कर्म के निमित्त से जो स्वभाव का घात होने की बात कही, उसका अर्थ ऐसा नहीं है कि आत्मा पहले तो शुद्ध था, फिर घातिया कर्म ने घात किया हो। कर्म निमित्त से अनादिकाल से ही आत्मा के स्वभाव का घात हो रहा है। यहाँ एक जिज्ञासा प्रकट होती है कि जब आत्मा का स्वभाव प्रकट ही नहीं था तो घात किसका किया? पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि घात शब्द के दो अर्थ होते हैं – एक तो किसी को नुकसान पहुँचा देना या नष्ट कर देना तथा दूसरा है उत्पन्न नहीं होने देना। आत्मा के स्वभाव, शक्ति, पवित्रता, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन को प्रकट नहीं होने देना भी घात करना ही कहलाता है। इसप्रकार यहाँ इस प्रकरण में घात करने का अर्थ 'उत्पन्न नहीं होने देना', लगाना चाहिये।

अघातिया कर्मों के उदय से बाह्य सामग्री की प्राप्ति होती है। नाम कर्म के उदय से शरीर, गोत्र कर्म के उदय से उच्च-नीच कुल की प्राप्ति, वेदनीय कर्म के उदय से संयोग और आयु कर्म के उदय से इस शरीर में रहने रूप अवस्था पायी जाती है। विशेष बात यह है कि अघातिया कर्म इस जीव को दु:ख नहीं देते, अघातिया कर्म के उदय से सामग्री तो मिलती है, लेकिन मोह के उदय का सहकार होने पर ही यह जीव सुखी-दु:खी होता है।

जड़ कर्म से जीव का स्वभाव घात और बाह्य सामग्री मिलना –

यहाँ शंका है कि कर्म के उदय से सामग्री का मिलना-बिछुड़ना और जीव के स्वभाव का घात होना कैसे संभव है; क्योंकि कर्म तो जड़ हैं, वे सामग्री को कैसे मिलाएंगे और जीव के चेतन स्वभाव का घात कैसे करेंगे?

इसका उत्तर देते हुए पण्डितजी कहते हैं कि कर्म यदि कर्ता होकर उद्यम से कार्य करे तब तो कर्म के चेतनता भी चाहिये और बलवानपना भी चाहिये, लेकिन ऐसा तो है नहीं। कर्म तो धूल-मिट्टी है, फिर भी कर्म के उदय और बाह्य परिस्थितियों में सहज निमित्त-नैमित्तिक संबंध है। इस बात को समझाने के लिये पण्डितजी ने दो उदाहरण दिये हैं, पहला मोहनधूल का – वह जिसके ऊपर मोहनधूल डाली जाती है, वह अपना विवेक/होश खो बैठता है, पागल हो जाता है। पर के वशीभूत होकर उसकी आज्ञा मानने लगता है। यहाँ उस धूल को कुछ ज्ञान नहीं है और बलवानपना भी नहीं है, फिर भी सहज ही ऐसा निमित्त-नैमित्तिक संबंध देखा जाता है।

दूसरा उदाहरण चकवा-चकवी का दिया है, जो सूर्य के प्रकाश में एक दूसरे से मिल जाते हैं और रात्रि में एक ही डाल पर बैठे होने पर भी मिलते नहीं हैं। रात्रि में किसी ने उनको दूर नहीं किया और सूर्य ने उनको मिलाया नहीं। सहज ही सूर्योदय के निमित्त से मिलना होता है और रात्रि में स्वयमेव ही बिछुड़ना होता है। ये सभी परिस्थिति निमित्त-नैमित्तिक संबंध को बताती हैं। जब कर्म का उदय आता है, तब ज्ञानादिक की शक्ति घटती हुई दिखाई देती है तथा जब अघातिया कर्म का उदय आता है तो अनुकूल और प्रतिकूल सामग्रियों के मिलने-बिछुड़ने जैसी परिस्थितियाँ भी स्वयमेव ही बन जाती है।

(क्रमश:)

अष्टाह्निका महापर्व ऑनलाइन संपन्न

तीर्थधाम मंगलायतन–अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल पार्ला मुम्बई एवं तीर्थधाम मंगलायतन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 22 से 29 नवम्बर तक पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया द्वारा समयसार व नियमसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात:काल जिनेन्द्र–पूजन, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति आदि कार्यक्रम भी हुये। सभी कार्यक्रमों का ऑनलाइन प्रसारण किया गया।

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं वरिष्ठ अध्यापक डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर को आयुर्वेद चिकित्सा क्षेत्र में नवीन शोध खोजों से चिकित्सा जगत को लाभान्वित करने एवं 30 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में फॉरसाइट फाउन्डेशन पुणे द्वारा **Innovative Consultant of Ayurveda** से सम्मानित किया गया।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

अवश्य लाभ लेवें - समयसार का मूलतः गाथाबद्ध अध्ययन प्रतिदिन सायं 6 से 7 बजे तक सर्वोदय अहिंसा के यूट्यूब चैनल एवं जूम एप पर संचालित हो रहा है, जिसमें अनेक विद्वानों के वक्तव्य का लाभ प्राप्त हो रहा है। सभी साधर्मीजन अवश्य लाभ लेवें।

ऑनलाईन मासिक गोष्ठी संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में मासिक गोष्ठी की शृंखला में दिनांक 6 दिसम्बर को '**चार अभाव**' विषय पर ऑनलाईन गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री नेमीचंदजी दालबाजार ग्वालियर एवं विशेष वक्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर थे।

इस अवसर पर प्रागभाव पर श्री नरेशजी जैन ग्वालियर, प्रध्वंसाभाव पर डॉ. अंकित शास्त्री लूणदा, अन्योन्याभाव पर ब्र. समता झांझरी उज्जैन, अत्यंताभाव पर पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई एवं चार अभाव की जीवन में उपयोगिता एवं जानने से लाभ पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती श्रुति जैन नोएडा, संचालन सुनीलजी शास्त्री मुरार ने किया। गोष्ठी के संचालक महेन्द्रकुमारजी जैन दानाओली, महेशजी जैन जनकगंज, सुनीलजी जैन भगत, रोहितजी जैन, अमितजी जैन रोमी रहे। तकनीकी कार्य संचित शास्त्री एवं कु. सांची जैन ने किया। समस्त कार्यक्रम जूम एप एवं यूट्यूब चैनल पर प्रसारित हुआ।

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक से प्रकाशित जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) एवं वीतराग–विज्ञान (मासिक) पत्रिकाएं ईमेल या मोबाइल पर मंगाने हेतु सम्पर्क करें - 9660668506 **(पीयूष कुमार जैन)**

श्री महावीर कुन्दकुन्द–कहान शिक्षा प्रसार समिति द्वारा संचालित

श्री समयसार विद्या निकेतन

आत्मायतन–ग्वालियर

विश्वविख्यात जैन स्वर्णमन्दिर एवं ऐतिहासिक गोपाचल पर्वत से सुप्रसिद्ध ग्वालियर के इतिहास में प्रथम बार
किन्हीं जैनाचार्य के ग्रन्थ के नाम पर विश्व का प्रथम छात्रावास

श्री समयसार विद्यानिकेतन
ज्ञानं ज्ञाने प्रतिष्ठितं
ग्वालियर

पत्र–व्यवहार एवं अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र
0751–4076810, 9893224022

अध्यक्ष
सतीश जैन (ठेकेदार)

निर्देशक
पण्डित शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री

अधीक्षक
पण्डित प्रवीण शास्त्री
पण्डित प्रदीप शास्त्री
97553 69352

संयोजक
पण्डित धनेन्द्र शास्त्री

प्राचार्य
श्रीमती अंजली जैन–9425135097

कार्यालय : प्राचार्य – श्री समयसार विद्यानिकेतन, आत्मायतन, हलवाट खाना, किला गेट, ग्वालियर–474003 (मध्यप्रदेश)

प्रवेश प्रारम्भ 2020–21

कक्षा 7वीं में (CBSE बोर्ड से)

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में निम्न गोष्ठियों का आयोजन हुआ –

(1) दिनांक 25 अक्टूबर को '**कर्म सिद्धांत : जिनागम के परिप्रेक्ष्य में**' विषय पर चतुर्दशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित जयराजनजी शास्त्री चेन्नई ने की। मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से निश्चल जैन दिल्ली ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से प्रियांश जैन दिल्ली ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित कैलाशजी शास्त्री बीकानेर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से अंकित जैन कुटोरा ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से प्रांजल जैन भोपाल ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता हर्षिल जैन सिंघई सागर एवं द्वितीय सत्र में ज्ञायक जैन सागर रहे। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(2) दिनांक 31 अक्टूबर को '**चार अनुयोग : एक सिंहावलोकन**' विषय पर पंचदशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से मेहुल जैन उदयपुर ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से शिवराज स्वामी मानगाँव ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से आर्जव माद्रप जालना ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से शुभम जैन गढाकोटा ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता तंदुल जैन दिल्ली एवं द्वितीय सत्र में अर्पित जैन भगवां रहे। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(3) दिनांक 29 नवम्बर को '**छहढाला**' विषय पर षोडशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अनेकान्तजी भारिल्ल जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से नीरज जैन ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से निष्कर्ष जैन नौगांव ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से स्वस्ति जैन ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से आकाश जैन मौ ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता अविरल जैन खनियांधाना एवं द्वितीय सत्र में आयुष जैन शाहगढ रहे। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ संस्कारतीर्थ शाश्वतधाम उदयपुर के तृतीय वार्षिकोत्सव का आयोजन दिनांक 5 दिसंबर से 7 दिसंबर तक ऑनलाइन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस मंगल प्रसंग पर पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री और डॉ. विवेकजी जैन छिंदवाड़ा द्वारा सर्वज्ञदेव विधान, श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान एवं श्री 24 तीर्थंकर विधान भक्तिभावपूर्वक संपन्न कराया गया।

वार्षिकोत्सव के प्रसंग पर विद्वत् गोष्ठियों का भी आयोजन किया गया। गोष्ठियों का संचालन सुश्री पूजा जैन, डॉ. अंकित किकावत व डॉ. ममता जैन शाश्वतधाम उदयपुर ने किया।

विपरीत परिस्थितियों में स्थापित ध्रुवधाम बांसवाड़ा, सिद्धायतन द्रोणागिरी, महावीर विद्या निकेतन नागपुर का विशेष परिचय भी समाज को कराया गया। साथ ही डॉ. पारसमलजी अग्रवाल उदयपुर, पण्डित जगदीश सिंह पंवार उज्जैन, श्री रमेशजी सेनानी दुबई का भी परिचय पण्डित प्रदीप झांझरी की अध्यक्षता में समाज को कराया गया। आप सभी जैनधर्म से प्रभावित होकर आत्मसाधना में संलग्न हैं।

शाश्वतधाम में श्री नरेन्द्र दलावत, श्री चांदमल ललितकुमार किकावत, श्री भावेश कालिका परिवार विधान के अवसर पर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री अजितजी जैन बडोदरा, श्री बी. डी. जैन मुम्बई, श्री आई. एस. जैन मुम्बई, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर का विशेष योगदान रहा।

शोक समाचार

(1) अशोकनगर (म.प्र.) निवासी पण्डित कैलाशचंदजी जैन का दिनांक 17 अक्टूबर को बैंगलोर में आत्मचिंतनपूर्वक देहावसान हो गया। आपने 40 वर्षों तक गुरुदेवश्री के प्रवचनों का लाभ लिया। इसके अतिरिक्त आपने मक्सी पार्श्वनाथ ट्रस्ट में 8 वर्षों तक एवं दिगम्बर जैन परमागम ट्रस्ट सोनागिर में लगभग 10 वर्षों तक अपनी सेवाएं प्रदान की। आप के.के.पी.पी.एस. उज्जैन के ट्रस्टी भी थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/– रुपये प्राप्त हुए।

(2) महिदपुर (म.प्र.) निवासी श्रीमती मनोरमादेवी जैन का दिनांक 6 अगस्त को 65 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं, जयपुर व सोनगढ शिविरों में सपरिवार लाभ लिया करती थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

पं. टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत है – ज्ञानपहेली

मोक्षमार्गप्रकाशक – अध्याय–7 (निश्चयाभासी एवं व्यवहाराभासी)

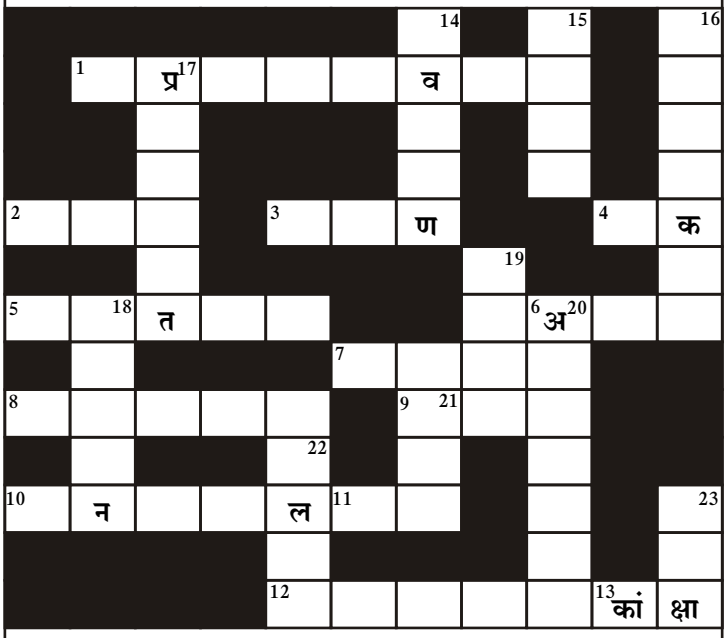

बाएं से दाएं –

1. देशचारित्र का अभाव होने पर शक्ति घातने की अपेक्षा जो कषाय है (8)
2. कुछ नहीं खाने का नाम या मात्र आहार का त्याग है (3)
3. आप्त भासित शास्त्र किसके विरुद्ध नहीं होते (3)
4. राजा और ..... मनुष्यपने की अपेक्षा (2)
5. यदि उपवास से ही सिद्धि हो तो ..... आदि तेईस तीर्थंकर दीक्षा लेकर दो ही उपवास क्यों करते? (5)
6. पुद्गलादि भेद किसके हैं (3)
7. व्यवहाराभासी सांसारिक चीजों के ..... सहित होकर अभूतार्थ धर्म को साधते हैं (3)
8. निश्चयाभासी अपने को किसका सद्भाव मानता है (5)
9. कैसी दशा होने पर कार्यों का प्रारब्ध मानेंगे (3)
10. देव भक्ति के अन्यथा स्वरूप में अरहंतों को कैसा मानते हैं (5)
11. परीक्षा रहित .....अनुसारी धर्मधारक व्यवहाराभासी (2)
12. परद्रव्य को ही जानने ही की विशेषता वाला ज्ञान (5)
13. कांक्षा

ऊपर से नीचे –

14. यथार्थ अर्थ का क्या करना (5)
15. 5–6वें गुणस्थान में निरंतर कौनसी निर्जरा होती है (4)
16. सर्वभेद जिसमें गर्भित हैं, ऐसा चैतन्यभाव (7)
17. किन तत्त्वों की परीक्षा करनी (6)
18. पापी पुरुषों ने कल्पित शास्त्रों को क्या ठहराया (5)
19. बंध का एक कारण (4)
20. देवभक्ति का अन्यथारूप में यह अरहंत किसे मानता है (7)
21. जिनागम में क्या न लेने का दण्ड नहीं है (3)
22. यदि ..... से धर्म हो तो मुसलमानादि भी धर्मात्मा हो जाएं (4)
23. जो कथन परस्पर विरुद्ध हों उनमें से जो कथन प्रत्यक्ष–अनुमानादि गोचर हों उनकी तो क्या करना (3)

प्रस्तुति – आप्तअनुशील शास्त्री, दमोह

(पृष्ठ 1 का शेष...शिखर महोत्सव)

कोलकाता, डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित अश्विनभाई मलाड, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ का प्रवचनों के माध्यम से और साथ ही अनेक युवा और प्रतिभाशाली विद्वानों का गोष्ठियों के माध्यम से प्रवचनसार पर लाभ प्राप्त हुआ। गोष्ठियों के लगभग सभी सत्रों में पण्डित श्री जे.पी. दोशी मुम्बई उपस्थित रहे। गुरुदेवश्री द्वारा प्रवचनसार पर हुये प्रवचनों की पुस्तक दिव्यध्वनिसार का ब्र. हेमचन्दजी हेम द्वारा अंग्रेजी भाषा में अनुवादित ग्रन्थ का लोकार्पण भी हुआ। कार्यक्रम में श्री पार्श्वनाथ की टोंक की लाइव वन्दना, बैंगलोर के जिनमंदिर के लाइव दर्शन भी हुये।

कार्यक्रम का समापन दिनांक 29 नवम्बर को रात्रि में श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर की अध्यक्षता एवं मुम्बई के श्री देवीलालजी जैन, श्री आई.एस.जैन, श्री ब्रजलालजी जैन, श्री मांगीलालजी चंदन के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। आभार–प्रदर्शन श्री अशोकजी जबलपुर ने किया। समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद और पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में तथा श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा के मार्गदर्शन और विराग शास्त्री जबलपुर व पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई के संयोजन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण जूम एप के साथ जैनेक्स्ट के यू ट्यूब चैनल पर किया गया।

प्रत्येक दिन विभिन्न सत्रों में समाज की विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों और श्रेष्ठीजनों को आमंत्रित किया गया। कोलकाता मुमुक्षु मण्डल के अनेक सदस्य इस कार्यक्रम के लाभ लेने के लिये शिखरजी पहुँचे थे। शिविर में प्रतिदिन 12 घंटे स्वाध्याय आदि तात्त्विक गतिविधियों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता और सहयोग के लिये ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अनंतराय ए. सेठ और महामंत्री श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई ने सभी वरिष्ठ एवं युवा विद्वानों, श्रेष्ठियों और लाभ लेने वाले समस्त साधर्मियों का हार्दिक आभार ज्ञापित किया।

कहानसार समयसार सम्प्राप्ति वर्षान्तर्गत

सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित

जीवन हो जावे समयसार योजना

इसके अन्तर्गत आप निम्न विषय कण्ठस्थ कर सकते हैं –

1. समयसार मूल गाथा 2. समयसार मल कलश 3. नाटक समयसार

यथार्थ में तो ग्रंथाधिराज कंठस्थ होना ही पुरस्कार है, फिर भी प्रथम 10 प्रतिभागियों को 5100/– की नगद राशि प्रत्येक ग्रंथ के लिए पुरस्कार रूप में दी जाएगी। उक्त विषय सुनाने वाले महानुभावों से रात्रिभोजन त्याग, कंदमूल–जमींकंद का त्याग अपेक्षित है।

निर्देशक – डॉ. संजीव गोधा जयपुर, संयोजक – संजय शास्त्री, समकित शास्त्री (95092 32733)

अपना नाम एवं पता सहित सही जवाब सादे कागज पर लिखकर वाट्सअप पर ही भेजें, भेजने की अंतिम तिथि 10 जनवरी 2021 है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के अतिरिक्त 5 सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

वाट्सअप पर भेजने हेतु –9660668506 (पीयूष कुमार जैन)

क्रमनियमितपर्याय

1

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

इस अंक से तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित **'क्रमनियमितपर्याय'** प्रारम्भ हो रही है। सभी पाठकगण अवश्य लाभ लेवें।

(दोहा)

सत्स्वरूप चैतन्यमय परमानन्द अनूप।
समयसारमय आत्मा मैं ही हूँ निजरूप।। १।।

(वीर)

स्वयं सिद्ध सर्वज्ञ स्वभावी परमातम का अभिनन्दन।
अज अनादिमध्यान्त आतमा का कर कोटि-कोटि वंदन।।
वीतराग-सर्वज्ञ हितंकर अरहंतों का सिद्धों का।
वंदन-अभिनन्दन करते हैं सभी संत भगवन्तों का।। २।।

अपने-अपने इष्टदेव को सभी मानते हैं सर्वज्ञ।
अपने-अपने गुरुजनों को सभी मानते हैं मर्मज्ञ।।
दिव्यध्वनि अनुसार रचित जो शास्त्र वही जिनवाणी है।
इनके ही मंगलप्रसाद से अपनी बात बनानी है।। ३।।

देव-शास्त्र-गुरु के प्रसाद से द्रव्य और पर्यायमयी।
वस्तु का स्वरूप जो जाना जाता है आनन्दमयी।।
यथायोग्य वन्दन अभिनन्दन करके आदर करता हूँ।
जैसा जो कुछ जाना मैंने उसकी चर्चा करता हूँ।। ४।।

स्वयं सिद्ध जो सभी द्रव्य हैं वे अनादि से हैं जैसे।
अनन्तकाल तक सदा रहेंगे स्वतः स्वयं वे सब वैसे।।
जीव रहेंगे जीव सदा ही वे जड़रूप नहीं होंगे।
जड़ भी जड़ ही सदा रहेंगे चेतनरूप नहीं होंगे।। ५।।

द्रव्यरूप से यह निश्चित है इसमें कुछ अदला-बदली।
कभी नहीं हो सकती एवं कभी नहीं होती भाई।।
यह त्रैकालिक परम सत्य है इसे सभी स्वीकार करो।
यह त्रैकालिक परम धरम है इससे न इन्कार करो।। ६।।

जैसे द्रव्य द्रव्यरूप से कभी न बदले बात अटल।
वैसे वह पर्यायरूप से नित बदले प्रतिपल पल-पल।।
जैसे द्रव्य अपरिणामी है वैसे ही परिणामी है।
द्रव्यरूप से कभी न बदले पर पर्याय बदलती है।। ७।।

नहीं बदलकर नित्य बदलना यह स्वभाव की खूबी है।
नित्य बदलकर नहीं बदलना यह भी बात बखूबी है।।
वस्तु नित्य है अर अनित्य है नित्यानित्य जरूरी है।
स्याद्वाद की अद्भुत महिमा जिनशासन की खूबी है।। ८।।

पर्यायों के परिवर्तन की अद्भुत कथा निराली है।
जिसे समझकर भवि जीवों की आँखें खुलने वाली हैं।।
सभी द्रव्य परिणमें नित्य अपने क्रमनियमित भावों में।[१]
क्रमनियमित पर्यायों में अर अपने-अपने भावों में।। ९।।

पर्यायें क्रमनियमित हैं - इस महासत्य का उद्घाटन।
एक पंक्ति[२] से हो जाता मिल जाता हमें मार्गदर्शन।।
आत्मख्याति की इस पंक्ति पर बार-बार बलि जाऊँ मैं।
अमृतचन्द्राचार्यदेव के चरणों में झुक जाऊँ मैं।। १०।।

एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्त्ता कभी नहीं होता।
एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का उत्पादक भी नहीं होता।।
सभी द्रव्य अपनी क्रमनियमित पर्यायों के कर्त्ता हैं।
फेरफार कर सके नहीं पर उत्पादक हैं कर्त्ता हैं।। ११।।

जिसका जो जैसा होना जो केवलज्ञानी ने जाना।
उसका वह वैसा होगा, न होय किसी का मनमाना।।
यद्यपि हम अपने परिणामों के कर्त्ता हैं उत्पादक हैं।
फेरफार कर सकें नहीं रे हम तो केवल ज्ञायक हैं।। १२।।

भूतकाल की वर्तमान की अर भविष्य की जाने जो।
तीनलोक की तीनकाल की सारी बातें जाने जो।।
वे ही हैं सर्वज्ञ और उनको ही जिनवर कहते हैं।
जिनवर की वाणी जिनवाणी उसको आगम कहते हैं।। १३।।

जिनवाणी में कदम-कदम पर ऐसी बातें आई हैं।
समोशरण में दिव्यध्वनि में जिनवर ने बतलाई हैं।।
उनमें शंका आशंका को है कोई अवकाश नहीं।
किसी तरह की मीन-मेख का इसमें कोई काम नहीं।। १४।।

अरे द्वारिका नगरी होगी भस्म आग की लपटों से।
नेमिनाथ ने बता दिया था बारह वर्षों पहले से।।
उसको नहीं बचा पाये थे सभी द्वारिका के दिग्गज।
अर्द्धचक्रवर्ती नारायण श्रीकृष्ण-से शक्तिपुरुष।। १५।।

---

१. आचार्य अमृतचन्द्र : आत्मख्याति ३०८ से ३११ गाथाओं की टीका
२. जीवो हि तावत्क्रमनियमितात्मपरिणामैरुत्पद्यमानो जीव एव, नाजीवः।

आदिनाथ ने भरी सभा में बता दिया सारे जग को।
मारीच महावीर होगा रे कोटि–कोटि सागर पहले।।
इसका तो निष्कर्ष यही सब पहले से ही नियमित था।
कोटि–कोटि सागर पहले से सब घटनाक्रम निश्चित था।।१६।।

अरे पुराणों में पग–पग पर भरी पड़ी ऐसी बातें।
जिनसे यह साबित होता है आगे–पीछे सब निश्चित।।
इसमें शंका–आशंका को है कोई स्थान नहीं।
सबकुछ पहले से नक्की है जग को कुछ भी भान नहीं।। १७।।

तीर्थंकर चौबीस होंय अर चक्रवर्ती बारह होते।
नारायण–प्रतिनारायण बलभद्र आदि नौ–नौ होते।।
यह भी तो सब लिखा हुआ हैकौन कहाँ कब–कब होंगे।
परिवर्तन की बात नहीं है जहाँ–जहाँ जब–जब होंगे।। १८।।

दश कोड़ाकोड़ी सागर तक कौन कहाँ कब क्या होगा।
आगामी चौबीसी में तीर्थंकर कौन–कौन होगा।।
इन सबकी पूरी नामावलि जिन आगम में आई है।
सौ इन्द्रों की उपस्थिति में केवलि ने बतलाई है।। १९।।

जिसका जहाँ और जब जैसा जो कुछ होने वाला है।
उसका वहाँ वही सब होगा नहीं बदलने वाला है।।
उसको इन्द्र–जिनेन्द्र कोई भी कभी बदल न पावेंगे।
जो मानेंगे वे ज्ञानी अज्ञानी मान न पावेंगे।। २०।।

कार्तिकेय अनुप्रेक्षा में यह साफ–साफ ही बात कही।
कदम–कदम पर जिन आगम में ऐसी बातें कही गईं।।
उनसे सहज सिद्ध होता सब पर्यायें क्रमनियमित हैं।
आगे कब क्या कैसा होगा सब ही बातें निश्चित हैं।। २१।।

यदि न मानें इन बातों को आगम में शंका होगी।
यदि आगम को भी न मानें सारी बात खतम होगी।।
जिनदर्शन का राजमहल तो आगम पर है टिका हुआ।
आगम पर शंका करने पर जिनदर्शन का क्या होगा?।। २२ ।।

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु की वाणी ही जिन आगम है।
आगम के अनुसार हमारे गुरुओं का भी जीवन है।।
आगम में शंका होने पर तीनों पर शंका होगी।
देव–शास्त्र–गुरु सर्वोपरि हैं इसमें आशंका होगी।। २३।।

जिन आगम को आगे रखकर क्या–क्या जाना है हमने।
जिन आगम आधार बनाकर क्या–क्या माना है हमने।।
एक बार गंभीर भाव से इसपर भी सोचो भाई!।
यह भी है गंभीर बात जो बात सामने है आई।। २४।।

छह महिना अर आठ समय में छह सौ आठ जीव भाई।
नितनिगोद से निकलेंगे अर इतने ही शिवपुर जाई।।
यह भी बात पूर्णतः पक्की इसमें कोई फेर नहीं।
अधिक नहीं जा सकते हैं अर कम भी न जाये भाई।। २५।।

सभी गति के सब जीवों की संख्या भी निश्चित भाई।
वह भी कम–बढ़ हो न सकेगी कोई कुछ करले भाई।।
स्वर्ग–नरक के सब जीवों की संख्या निश्चित होती है।
उसमें बदलाबदली भाई कभी नहीं हो सकती है।। २६।।

बदलाबदली होय कभी न – यह अनन्त सुखदायी है।
परिवर्तन की बात सोचना ही अनन्त दुखदायी है।।
परिवर्तन का भाव छोड़ यह परम सत्य स्वीकार करो।
जो कुछ जब जैसा होना सब उसको अंगीकार करो।। २७।।

अंगीकृत यह परम सत्य सुख–शान्ति लायेगा जीवन में।
आकुलता होगी सहज दूर आनन्द आयेगा जीवन में।।
आनन्द आयेगा जीवन में समभाव आयेगा जीवन में।
अरे अतीन्द्रिय ज्ञान और आनन्द आयेगा जीवन में।। २८।।

पर्यायों के परिवर्तन की क्रमिक व्यवस्था अद्भुत है।
क्रम भी तो नियमित है यह अद्भुत से भी अद्भुत है।।
क्रम से है अर क्रम नियमित है हमें नहीं कुछ करना है।
हम अपने में ही रहें सहज बस सहजभाव से रहना है।। २९।।

यद्यपि कुछ करना नहीं हमें पर पूरी बात समझना है।
अर पूरी बात समझकर भाई ज्ञाता–दृष्टा रहना है।।
अरे आत्मा का स्वभाव तो ज्ञाता–दृष्टा रहना है।
करने–धरने के विकल्प न पर में हमें उलझना है।। ३०।।

पर में तो नहीं उलझना है न पर में जमना–रमना है।
यदि सहज जानना हो जावे तो ज्ञाता–दृष्टा रहना है।।
यद्यपि अपनी पर्यायों के कर्त्ता–धर्त्ता हम होते हैं।
पर उनमें अपनी मर्जी से कुछ भी तो नहिं कर सकते हैं।। ३१।।

कुछ भी तो नहिं कर सकते हैं जो नियमित क्रम में होता है।
उसके ही कर्त्ता कहलाते उसके ही कर्त्ता होते हैं।।
ऐसे कर्त्ता कहलाने में है हमें कोई उत्साह नहीं।
हमें कोई रस नहीं अरे हमको अब कोई चाह नहीं।। ३२।।

(क्रमशः)

17 दिसम्बर 2020, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

षट्खण्डागम ग्रन्थ की वाचना

तीर्थधाम मंगलायतन में प्रथम बार प्रथम श्रुत स्कन्ध 'षट्खण्डागम धवला टीका सहित' वाचना का कार्यक्रम मार्गशीर्ष पंचमी, शनिवार 5 दिसम्बर 2020 से अनवरत प्रारम्भ हो गया है, जिसका उद्घाटन कार्यक्रम 5 दिसम्बर को रखा गया। इस अवसर पर प्रात:काल सर्वप्रथम आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का आयोजन हुआ, तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का प्रवचन हुआ।

उद्घाटन सभा का संचालन डॉ. संजीवकुमार गोधा जयपुर, मंगलाचरण श्रीमती निष्ठा जैन धर्मपत्नी मंगलार्थी अगम जैन **(I.P.S.),** अध्यक्ष श्री सुनीलजी सर्राफ सागर, मुख्य अतिथि श्री विजयकुमारजी मुम्बई, विशिष्ट अतिथि श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, ध्वजारोहणकर्ता श्री चम्पालालजी भण्डारी, रमेशजी भण्डारी परिवार बैंगलोर, उद्घाटनकर्ता कोलकाता मुमुक्षु मण्डल द्वारा श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता एवं धवला विराजमानकर्ता श्रीमती ज्योति-अनिल जैन (पी.डब्लू.डी.) थे। आभार प्रदर्शन श्री पवन जैन अलीगढ एवं पण्डित अशोक लुहाड़िया मंगलायतन ने किया।

ब्र. कल्पना बेन जयपुर द्वारा मंगलाचरण करके धवला वाचना का औपचारिक उद्घाटन किया गया। साथ ही स्थानीय विद्वान पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, पण्डित सचिनजी जैन, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री का समागम प्राप्त हुआ।

नोट :- षट्खण्डागम (धवलाजी) ग्रन्थ वाचना का कार्यक्रम प्रतिदिन 1.30 से 3.00 बजे तक रखा गया है, आप इसे ऑनलाइन **Zoom ID 912-1984198 Passcode 1008** पर देख सकते हैं।

आगामी कार्यक्रम

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर द्वारा दिनांक 25 दिसम्बर 2020 से 1 जनवरी 2021 तक **श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान** का आयोजन ऑनलाइन किया जा रहा है। सभी साधर्मीजन अवश्य लाभ लेवें। **निवेदक :** श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, इन्दौर

(पृष्ठ 1 का शेष...शिक्षण शिविर)

अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित संजयजी जेवर कोटा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

कक्षाएं – शिविर में प्रतिदिन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा प्रात: आगम व अध्यात्म के संदर्भ में मूलनय और सायंकाल अर्हत् सर्वज्ञसिद्धि, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री द्वारा प्रमाण का स्वरूप व भेद-प्रभेद, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा क्रमबद्धपर्याय, पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ द्वारा द्रव्यसंग्रह, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री द्वारा तत्त्वार्थसूत्र, पण्डित शुभमजी शास्त्री द्वारा द्रव्य-गुण-पर्याय पर कक्षाओं का लाभ मिला।

नियमसार विधान – प्रतिदिन प्रात: डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित 'नियमसार महामंडल विधान' का आयोजन हुआ।

समापन समारोह – दिनांक 8 नवम्बर को सायंकाल शिविर का समापन समारोह डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर अनेक विद्वानों ने शिविर के संबंध में अपने मनोभाव व्यक्त किये। परीक्षा परिणाम की घोषणा डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने, शिविर की रिपोर्ट तथा विद्वानों व अध्यापकों का आभार पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं कार्यकर्ताओं का आभार पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया। अन्त में अध्यक्षीय उद्बोधन एवं डॉ. भारिल्ल के उद्बोधन के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ। समारोह का मंगलाचरण रिमांशु शास्त्री जयपुर ने एवं संचालन पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई ने किया।

अभूतपूर्व लाभ – शिविर में लगभग 20 विद्वानों द्वारा हुई धर्म प्रभावना को ज़ूम एप के अतिरिक्त यूट्यूब पर 10 देशों में 1,29,037 व्यूअर्स ने 24,600 घंटों तक देखा। प्रतिदिन के व्यूज़ के अनुसार लगभग 18 से 20 हजार व्यूज़ रहे।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur67@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2020

प्रति,